श्रीगुरु चरन सरोज रज, निज मनु मुकुरु सुधारि ।
बरनऊँ रघुबर बिमल यशु, जो दायकु फल चारि ॥

बुद्धिहीन तनु जानिके, सुमिरौं पवन कुमार ।
बल बुद्धि विद्या देहु मोहि, हरहु कलेश विकार ॥

चौपाईयां

१.
जय हनुमान ज्ञान गुन सागर ।
जय कपीस तिहुँ लोक उजागर ॥

२.
राम दूत अतुलित बलधामा ।
अंजनि पुत्र पवनसुत नामा ॥

३.
महाबीर बिक्रम बजरंगी ।
कुमति निवार सुमति के संगी ॥

४.
कंचन वरण विराज सुबेसा ।
कानन कुण्डल कुंचित केसा ॥

५.
हाथ वज्र और ध्वजा विराजे ।
काँधे मूँज जनेऊ साजे ॥

६.
शंकर सुवन केसरी नंदन ।
तेज प्रताप महा जग वंदन ॥

७.
विद्यावान गुणी अति चातुर ।
राम काज करिबे को आतुर ॥

८.
प्रभु चरित्र सुनिबे को रसिया ।
राम लखन सीता मन बसिया ॥

९.
सूक्ष्म रूप धरि सियहिं दिखावा ।
विकट रूप धरि लंक जरावा ॥

१०.
भीम रूप धरि असुर संहारे ।
रामचंद्र के काज सँवारे ॥

११.
लाय सजीवन लखन जियाए ।
श्रीरघुबीर हरषि उर लाए ॥

१२.
रघुपति कीन्ही बहुत बड़ाई ।
तुम मम प्रिय भरतहि सम भाई ॥

१३.
सहस बदन तुम्हरो जस गावे ।
अस कहि श्रीपति कंठ लगावे ॥

१४.
सनकादिक ब्रह्मादि मुनीसा ।
नारद सारद सहित अहीसा ॥

१५.
जम कुबेर दिगपाल जहाँ ते ।
कवि कोविद कहि सके कहाँ ते ॥

१६.
तुम उपकार सुग्रीवहिं कीन्हा ।
राम मिलाय राजपद दीन्हा ॥

१७.
तुम्हरो मंत्र विभीषन माना ।
लंकेश्वर भए सब जग जाना ॥

१८.
जुग सहस्त्र जोजन पर भानू ।
लील्यो ताहि मधुर फल जानू ॥

१९.
प्रभु मुद्रिका मेलि मुख माहीं ।
जलधि लांघि गए अचरज नाहीं ॥

२०.
दुर्गम काज जगत के जेते ।
सुगम अनुग्रह तुम्हरे तेते ॥

२१.
राम दुआरे तुम रखवारे ।
होत न आज्ञा बिनु पैसारे ॥

२२.
सब सुख लहै तुम्हारी सरना ।
तुम रक्षक काहू को डर ना ॥

२३.
आपन तेज सम्हारो आपै ।
तीनों लोक हांक तें कांपै ॥

२४.
भूत पिशाच निकट नहिं आवै ।
महावीर जब नाम सुनावै ॥

२५.
नासै रोग हरै सब पीरा ।
जपत निरंतर हनुमत बीरा ॥

२६.
संकट तें हनुमान छुड़ावै ।
मन क्रम वचन ध्यान जो लावै ॥

२७.
सब पर राम तपस्वी राजा ।
तिन के काज सकल तुम साजा ॥

२८.
और मनोरथ जो कोई लावै ।
सोई अमित जीवन फल पावै ॥

२९.
चारों जुग परताप तुम्हारा ।
है परसिद्ध जगत उजियारा ॥

३०.
साधु संत के तुम रखवारे ।
असुर निकंदन राम दुलारे ॥

३१.
अष्ट सिद्धि नौ निधि के दाता ।
अस बर दीन जानकी माता ॥

३२.
राम रसायन तुम्हरे पासा ।
सदा रहो रघुपति के दासा ॥

३३.
तुम्हरे भजन राम को पावै ।
जन्म जन्म के दुख बिसरावै ॥

३४.
अंतकाल रघुबर पुर जाई ।
जहाँ जन्म हरि-भक्त कहाई ॥

३५.
और देवता चित्त न धरई ।
हनुमत सेइ सर्ब सुख करई ॥

३६.
संकट कटै मिटै सब पीरा ।
जो सुमिरै हनुमत बलबीरा ॥

दोहे (समाप्ति)
जय जय जय हनुमान गोसाईं ।
कृपा करहु गुरु देव की नाई ॥

जो सत बार पाठ कर कोई ।
छूटहि बंदि महा सुख होई ॥

जो यह पढ़े हनुमान चालीसा ।
होय सिद्धि साखी गौरीसा ॥

तुलसीदास सदा हरि चेरा ।
कीजै नाथ हृदय महँ डेरा ॥

पवन तनय संकट हरन, मंगल मूरति रूप ।
राम लखन सीता सहित, हृदय बसहु सुर भूप ॥

समाप्त ।